मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh
ISSN:2456-2904

मसालों वाली फसलों में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

[1]दीपिका चौहान, [2]विजय कुमार मिश्रा, [3]सम्भ्रांत कुमार, [4]अनुपम तिवारी

[1]कीट विज्ञान विभाग, गोबिन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर,उत्तराखण्ड–353 145

[2, 3] कीट एवं कृषि जन्तु विज्ञान विभाग, [4] उद्यान विज्ञान विभाग

कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221 005

[2]ई–मेलः premvijaybhu@gmail.com

परिचय

भारत में मसालों का प्रयोग एवं उनका निर्यात प्राचीन समय से हो रहा है। मसालों के निर्यात से हमारे देश को प्रतिवर्ष लगभग 15,000 करोड़ रूपये की वार्षिक मुद्रा प्राप्त होती है इनमें से मुख्य मसाले जैसे काली मिर्च, अदरक, इलायची, हल्दी, लहसुन, तेजपत्र, दालचीनी एवं जीरा आदि मसालों का प्रयोग कई भोज्य एवं पेय पदार्थो के निर्माण में किया जाता रहा है। इसके अलावा कई मसालों मे औषधीय गुण होने के कारण इसका इनका प्रयोग औषधीय निर्माण में भी किया जाता है। खाद्य पदार्थो के रूप उपयोग होने वाले इन मसालों को कई कीट आर्थिक रूप से क्षति पहुँचाते है। अतः इन मसालों में हानिकारक कीटों का सुगमतापूर्वक नियंत्रण करने के लिए इन कीटों के जीवन चक्र तथा इनसे होने वाली क्षति के बारे में पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है ताकि इन कीटों का नियंत्रण भली–भाति किया जा सके। मसालों में लगने वाले प्रमुख कीटों का नियंत्रण निम्न प्रकार है–

अदरक का तना तथा प्ररोह बेधक कीट (*कोनोगीथस पॉक्टिफेरालिस*)

यह अदरक का सर्वाधिक हानि पहुँचाने वाला कीट है। इस कीट की सूड़ियॉ इसकी हानिकारक अवस्था हैं। इस कीट की सूड़ तने तथा प्ररोह को भेदती है। प्रभावित पौधे पीले रंग के हो जाते हैं तथा सूख जातें हैं। जिसके परिणामस्वरूप पौधा मर जाता है। इस कीट का वयस्क मध्यम आकार का होता है तथा इसके पंखों पर छोटे–2 काले रंग के धब्बे होते है। इस कीट का जीवन चक्र 4–5 सप्ताह में पूरा होता है।

नियंत्रणः

1. क्षतिग्रस्त पौधों को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए।
2. खेतों में साफ–साफाई का विशेष ध्यान देना चाहिए तथा आस–पास पाये जाने वाले वैकल्पिक पोषित पौधों को नष्ट कर देना चाहिए।
3. *ऐपेंटलिस* जाति एवं *ब्रेकान ब्रेविकार्निस* सूंड़ी परजीवी तथा *ब्रेकीमेंरिया* जाति प्यूपा परजीवी है।
4. लेसबिंग वग, लेडीबर्ड बीटल, स्पाइडर तथा ड्रगप फ्लाई इसक कीट के परभक्षी है।
5. प्रभावित तनों को काटकर तथा सूड़ियों को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए तथा आवश्यकता पड़ने पर नीम के तेल (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिए।
6. तना बेधक के नियंत्रण के लिए मैलाथियान का छिड़काव 21 दिनों के अन्तराल पर जुलाई से अक्टूबर माह में करना चाहिए। सबसे ऊपरी वाली पत्ती पर कीट दिखने पर छिड़काव आरम्भ करना चाहिए।

पोतू भृंग (*लोगीटार्सस निग्रीपेनीस*)

यह कीट काली मिर्च को सर्वाधिक हानि पहुचाता है। इसके वयस्क तनों, पत्तियों तथा फलों (बेरी) को हानि पहुँचाते है। इसकी सूड़ियां फलों को बेधित करके अन्दर से खोखला बना देती है। प्रभावित बेरी प्रारम्भ में पीले रंग की तथा बाद में काले रंग में परिवर्तित हो जाती है। छायादार स्थानों पर इन कीटों की संख्या अधिक होती है। प्रौढ भृग कीट नीले से पीले आकार का होता है। इस कीट का जीवन चक्र 39–50 दिनों में पूर्ण होता है।

नियंत्रणः

1. फसल में छाया का नियंत्रण करके इस कीट को कम किया जा सकता है।

2. काली मिर्च की किस्म जैसे 'कालूवेरी टाइप–2' इस कीट के प्रति प्रतिरोधी है।
3. अगस्त, सितम्बर तथा अक्टूबर में माह में इस कीट को नियंत्रित करने के लिए नीमगोल्ड (नीम पर आधारित कीटनाशक) का छिड़काव पत्तियों की निचली सतह पर पूर्ण रूप से करना चाहिए।

केले का माहू (*पेन्टालोनिया नाइग्रोनर्वोसा*)

इस कीट के शिशु एवं वयस्क पत्तियों एवं तनों से रस चूस कर अपना भोजन प्राप्त करते है। यह कीट इलायची में मोजैक, एमोंमन मोजैक एवं बड़ी इचायची में फार्की रोग का प्रसार करते है। यह कीट पंखहीन तथा पुंखयुक्त दोनो प्रकार का गहरे भूरे रंग का 1.34 मिमी. लम्बा होता है। इस कीट में अनिषेक जनन द्वारा प्रजनन होता है अर्थात मादा सीधे शिशु को जन्म देती है।

नियंत्रणः

1. प्रभावित पौधों को नष्ट कर देना चाहिए ताकि माहू द्वारा फैलने वाली बीमारी तथा उसकी बढ़ती हुई संख्या को कम किया जा सके।
2. खेतों में खाद की उचित मात्रा प्रयोग करनी चाहिए।
3. लेसविंग बग, हापर फ्लाई, लडी बर्ड बीटल, स्पाइडर जैसे प्राकृतिक कीट माहू के परभक्षी कीट हैं अतः हमें इन कीटों के संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए।
4. एमिडाक्लोरपिड 17.8 एस एल का 0.3–0.5 मिली. प्रति ली. की दर से छिड़काव करना चाहिए।

दालचीनी की तितली (*कीलेसिया किल्टया*)

यह कीट दालचीनी तथा तेजपात्र को अत्याधिक हानि पहुॅचाता है। प्रारम्भिक सूड़ी नई कोमल पत्तियों कों खाने लगती है तथा बाद की अवस्था में इस कीट की सूड़ी मध्य सिरा को छोड़ कर पूरी पत्तियों को खा जाती है। अत्यधिक प्रकोप की अवस्था में पौधों की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। वयस्क कीट का शरीर सफेद धब्बे युक्त होता है तथा पंख मखमली भूरे रंग के होते है। इसका जीवन चक्र 26–36 दिनों में पूरा होता है।

नियंत्रणः

1. वयस्क कीटों को जाल से पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
2. *टलीनोमस रेमस* इस कीट का अण्डा परजीवी हैं
3. प्रारम्भिक अवस्था में सूड़ियों तथा प्यूपा को हाथ से पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
4. अत्यधिक प्रकोप की अवस्था में क्यूनालफास 0.05 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए।

5– रसाद कीट (*थ्रिप्स टोबैकाई*)

यह लहसुन तथा प्याज का हानिकारक कीट है। इस कीट के शिशु तथा वयस्क पत्तियों की निचली सतह को खुरचकर चूसते है। क्षतिग्रस्त पत्तियॉ मुड़कर सूख जाती है तथा चमकीली सफेद रंग की दिखती है। इस कीट का वयस्क 1.5 मिमी. लम्बा, पीले भूरे रंग का तथा झालरदार पंखों वाला होता है। यह कीट सम्पूर्ण वर्ष भर सक्रिय रहता है।

नियंत्रणः

1. खेत मे साफ सफाई का विशेष ध्यान देना चाहिए।
2. लहसुन तथा प्याज वैकल्पिक खाद्य पौधे जैसे बंदगाभी, कपास, खीरा, कद्दू तथा टमाटर के साथ नही उगाना चाहिए।
3. लहसुन के चारों ओर मक्के की दो पंक्तियॉ अथवा गेहूॅ की पंक्ति अन्दर की ओर तथा मक्के की पंक्ति बाहर की ओर बाधा फसल के रूप में लगानी चाहिए।
4. *सिरानियस मिन्स* इसके वयस्क शिशुओं का परजीवी है।
5. हॉपर फ्लाई, पायरेट बग, लेसविंग, लेडीबर्ड बीटलत तथा स्पाइडर इस कीट के परभक्षी है।
6. जैविक खाद का प्रयोग करना चाहिए तथा आवश्यकता पड़ने पर ही रसायनिक खाद का प्रयोग करना चाहिए।